

परोपकाराय सतां विभूतयः

जैनी वांचनमाला.

बाल जीवोने भणवा निमित्ते

छपावी प्रसिद्ध कर्ता,

सद्गत शेठ वेणीचंद सुरचंद संस्थापित

श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ

महेसाणा.

श्री सूर्यप्रकाश प्रिन्टिंग प्रेसमा मूळचंदभाई त्रीकमलाले
छाप्युं. पानकोरनाका-अमदावाद.

आवृत्ति चौथी.

प्रत २०००.

संवत् १९८५ वीर संवत् २४५२ सने १९२९

किम्मत, ०-१-६.

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
ગુજરાતી કૉપીરાઈટ-સંગ્રહ

ભૂમિકા.

વાંચનજ્ઞાન સંપાદન કરવા માટે પ્રથમ કક્કો શીખવા જરૂર છે પટલાજ માટે આ ગ્રંથમાં પ્રથમ મૂલાક્ષરો આપીને ચારા ક્ષરીના પદો આપવામાં આવ્યા છે.

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય	
[ગુજરાતી કૉપીરાઈટ વિભાગ]	
અનુક્રમાંક	૧૪૭૪૮૦ વર્ગીક
પુસ્તકનું નામ	જૈની લાંચનમાળા
વિષય	મ : ૮૪૪ : ૫૩૬

દરબું મુશ્કેલ છે તેથી

ત્યારબાદ

પાસલ

ધી

ઈષ

જ-

ધી

ઈ

પ્રતિ

બહાર પાઠવામાં આવ્યા છે.

આપણા જૈન ધર્મગ્રંથો મોટે ભાગે શાસ્ત્રી લીપીમાં છે તેથી તે લીપીનું જ્ઞાન દરેકને જરૂર હોવું જોઈએ.

સં. ૧૯૮૫ ની
ચેત્રી પૂર્ણિમા.

}

લિ. પ્રસિદ્ધ કર્તા.

जैनी वांचनमाला.

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ १ । ० ॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

अ आ इ ई उ ऊ रु ऋ नृ नृ
अ आ ऌ ऍ उ ङ ऋ ॠ नृ नृ
ए ऐ-औ ञ- ओ ञ-औ अं अः ॥
ओ औ ओ ओ ओ औ औ अं अः ॥
क ख ग घ ङ च छ ज झ-ञ ञ ट ठ
ड ढ ङ ध ङ य छ ञ ज झ ञ ट ठ
डं—रु ठ ण त थ द ध न प फ ब भ
ड ड ढ धु त थ द ध न प इ ञ ल
म य र ल व श ष स ह लं क्ष ज्ञः
भ य र ल व श ष स ह लं क्ष ज्ञः
क का कि की कु कू क-के कै का-को कौ कं कः
क का कि की कु कू के के कै को को कौ कं कः

ख खा खि खी खु खू ख-खे खै खा-खो खौ खं खः

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ औ अं अः

ग गा गि गी गु गू ण-गे गै णा- गो गौ गं गः

[illegible]

घ घा घि घी घु घू ङघ-घे घै ङघा-घो घौ घं घः

घ धा वि धी ध्रु व्र वे ये व्रै व्रो वो वौ वं वः

ਭ ਭਾ ਭਿ ਭੀ ਭ ਭ ਭ-ਭੇ ਭੈ ਭਾ-ਭਾ ਭੀ ਭੰ ਭ:

செய்து கொடுத்திருக்கிறார்கள். இதைப் பற்றி நான் சொல்ல விரும்புகிறேன்.

न नानि नी नी न नान-नो नौ नान-नो नौ नं नः

य य वि वी सु सू षि=षि षि=षि वा=वा वा वः
य य वि वी य य ये ये यै यो यो यौ यं यः

क का कि की कू कु-के कै ला-लो लौ लं लः

ਭ ਭਾ ਭਬ ਭ੍ਰ ਭੁ ਭਵ ਭਿ-ਭੀ ਭਾਂ ਭੰ ਭੜ
ਭੁ ਭੂ ਭ੍ਰ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ ਭੁ

ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ
 ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ ਚ ਛ

ज जा जि जो जु झ ञ--ञ ज्ञ ञि--ञो ञा न न्न
रे र रि री रु र्ह रे रे रे रे रे रे रे रे रे

क का कि की कू कु कू-कू कौ का-को कौ कं कं

க கி கி கி கு கூ க--க க|கி--கி கி க க
உ ஁ இ ி உ ஁ உ ஁ உ ஁ உ ஁ உ ஁

ଖ ଖା ଙ ଖା ଙୁ ଙୁ ଖ ଖ ଙ ଖା ଖା ଖା ଙ ଖ
 ଗ ଗା ଗି ଗି ଗ ଗ ଗା ଗେ ଗେ ଗା ଗେ ଗେ ଗ

ज जा जि जी जु जू ज्ञ-ज ज्ञा ज्ञा-ज्ञा ज्ञा
 ञ ञा ञा-ञा ञा-ञा ञा-ञा ञा-ञा ञा-ञा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ट टा टि टी ठू हू ण-टे टै णा-टो टौ टं ट

८ ५ १२ ११ ६ ५ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठा-ठे ठै ठा-ठो ठौ ठं ठः
 ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठे ठै ठे ठौ ठं ठः
 ड डा डि डी डु डू डा-डे डै डा-डो डौ डं डः
 ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङे ङै ङे ङौ ङं ङः
 ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढा-ढे ढै ढा-ढो ढौ ढं ढः
 ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढे ढै ढे ढौ ढं ढः
 ण णा णि णी णु णू णा-णे णै णा-णो णौ णं णः
 ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञे ञे ञै ञे ञौ ञं ञः
 त ता ति ती तु तू ता-ते तै ता-तो तौ तं तः
 त ता ति ती तु तू ते ते तै तो तो तौ तं तः
 थ था धि थी थु थू थ-थे थै था-थो थौ थं थः
 थ था धि थी थु थू थे थे थै था था थौ थं थः
 द दा दि दी दु दू दा-दे दै दा-दो दौ दं दः
 द दा दि दी दु दू दे दे दै दा दा दौ दं दः
 ध धा धि धी धु धू ध-धे धै धा-धो धौ धं धः
 ध धा धि धी धु धू धे धे धै धा धा धौ धं धः
 न ना नि नी नु नू ना-ने नै ना-नो नौ नं नः
 न ना नि नी नु नू ने ने नै ना ना नौ नं नः
 प पा पि पी पु पू प-पे पै पा-पो पौ पं पः
 प पा पि पी पु पू पे पे पै पा पा पै पं पः

(४)

फ फा फि फी फु फू फा-फे फै फा-फो फौ फं फः
 इ ई इि ईी इु इू इा-इे इै इा-इो इौ इं इः
 व वा वि वी वु वू वा-वे वै वा-वो वौ वं वः
 अ आ अि अी अु अू अा-अे अै अा-अो अौ अं अः
 भ भा भि भी भु भू भा-भे भै भा-भो भौ भं भः
 ल ला लि ली लु लू ले ले लै ला-लो लौ लं लः
 म मा मि भी मु मू मा-मे मै मा-मो मौ मं मः
 न ना नि नी नु नू ने ने नै ना-नो नौ नं नः
 य या यि यी यु यू या-ये यै या-यो यौ यं यः
 र रा रि री रु रू रा-रे रै रा-रो रौ रं रः
 २ रा रि री रु रू रे रे रै रा-रो रौ रं रः
 ल ला लि ली लु लू ले ले लै ला-लो लौ लं लः
 ल ला लि ली लु लू ले ले लै ला-लो लौ लं लः
 व वा वि वी वु वू वा-वे वै वा-वो वौ वं वः
 व वा वि वी वु वू वे वे वै वा-वो वौ वं वः
 श शा शि शी शु शू शा-शे शै शा-शो शौ शं शः
 श शा शि शी शु शू शे शे शै शा-शो शौ शं शः
 ष षा षि षी षु षू षा-षे षै षा-षो षौ षं षः
 ष षा षि षी षु षू षे षे षै षा-षो षौ षं षः

(५)

स सा सि सी सु सू स-से सै सा-सो सौ सं सः
 स सा सि सी सु सू से से सै सो सो सौ सं सः
 ह हा हि ही हु हू ह-हे है हा-हो हौ हं हः
 छ छा छि छी छु छू छ-छे छै छा-छो छौ छं छः
 क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्ष-क्षे क्षै क्षा-क्षो क्षौ क्षं क्षः
 झ झा झि झी झु झू झ-झे झै झा-झो झौ झं झः
 श शा शि शी शु शू श-शे शै शा-शो शौ शं शः

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९	६९	७९	८९	९९
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००

पाठ १ लो. अ वाला शब्दो.

अकबर	गपसप	जनपद
अक्षर	गलपण	जमण
अगम	घडपण	जलचर
अचरत	घरवट	झगमग
अजगर	घडतर	झटझट
कथन	घमघम	झटपट
कनक	घनफल	झमझम
कपट	चकमक	झलझल
कफन	चटपट	टगमग
कबर	चणतर	टपकटपक
खटपट	चपचप	टलवल
खटक	चरर	टगरटगर
खडखड	छबछब	टपटप
खद्बद्	छमछम	ठणठण
खलक	छपर	ठमठम
गगन	छणछण	ठमक
गजकण	जगत	ठकठक
गडबड	जतन	ठग
नवतर	अभय	वयर

पाठ २ जो. अ वाला शब्दो.

डगमग	नमन	यजन
डबडब	नरक	यवन
डमडम	तडफड	रगझक
डगडग	नवरस	रइमत
डझन	पगरण	लखत
ढणढण	पचपच	लगन
ढमढम	फटक	वलगण
तगतग	फडक	वलकल
तखत	बगभगत	शकट
तडतड	बखतर	शतक
थरथर	भगत	षडज
दक्षण	भजन	सगवड
दफतर	भडभड	सगपण
दसकत	मगज	हठ
धडकधडक	मगदल	हबक
धनधन	मदनफल	हरख



पाठ ३ जो. आ वाला शब्दो.

आकाश	आदरभाव	जानवर
आकारत	आपघात	नाटकशाला
अगाध	आराधना	नाशकारक
आधार	आवकजावक	नजरबाज
आखर	आसपास	पराभव
आगार	ताकात	बदामपाक
आजार	ज्ञानकला	बागवान
आडत	जायफल	बापदादा
आडकथा	जामफल	साधारण

पाठ ४ थो. इ वाला शब्दो.

इजत	सिफारस	तिरकस
इजारदार	निमकहलाल	चिकन
इमानदार	निशाचर	खिजमत
विधिवाद	निवारण	खिसमिस
बिगाड	किरपाल	दिगपाल
बिलाडी	किनखाब	दालिया
मानिता	तिलक	दिनमान
मिलनसार	तिरमबाज	दिगभाग

पाठ ५ मो. ई वाला शब्दो.

ईशान	तीखास	पीचकारी
कीलीदार	दीनदयाल	मीठीआवल
कीताब	दीनानाथ	मीनाकारी
जीवितदान	नीसरणी	शीखामण
जीवात	कडछी	शीतला
जीरासाल	परीक्षा	सीताफल
सीरियक	सीतापुर	बीज
गीत	चीराक	भीखारी

पाठ ६ मो. उ वाला शब्दो.

उंटडी	गुणाकार	बुकान
उकरडी	गुलाबदानी	बुध
उकलाट	कुसकी	बुखार
उजमणुं	तुलना	भुवन
उद्यापन	नुकशान	मुकुट
उदारता	पुरण	पुरातन
गुजरात	पुरातबाकी	मुखपाठ
रुखमिणी	कुमारपाल	दुकान
कुबर	खुरासाणी	घुघरमाल

(१०)

पाठ ७ मो. ऊ वाला शब्दो.

ऊगमणुं	मूलदार	दूकाल
ऊठमणुं	मूलाक्षर	दूबकी
सूवावड	भूलवणी	चूरण
सूरजमुखी	भूलचूक	कूडकपट
शूनकार	बूमाबूम	धूलधाणी
झूटालूट	पूरवणी	धूपधानुं
मूतर	दूधपाक	शूरातन
पूलाक	भूत	भूपाल

पाठ ८ मो. ए वाला शब्दो.

एकतार	चेतवणी	तहेनात
एकतालीश	चेहेनबाजी	तेरीख
एकमेक	छेडाछेडी	तेंतालीश
एकादशी	छेतरामण	देशाचार
एठवाड	छेलछबीली	देशाटन
एदीखानुं	जेठीमध	एकाकार
एशआराम	तहेवार	एकवीश
एकासणुं	केशी	एडीटर

पाठ ९ मो. ऐ वाला शब्दो.

ऐहिक	दैवत	फैजापुर
औरावत	दैत	भैरव
कैलासवास	दैनिक	मैयत
गैरिक	नैवेद	मैथुन
तैयार	पैसाटका	रैयत
तैल	पैसादार	वैदक
थैकार	पैठण	शैली
कैरव	कैकेयी	नैऋत

पाठ १० मो. उ वाला शब्दो.

ओगणीश	ओरसडी	कोठार
ओछाड	ओलखाण	कोथमीर
ओजार	ओलग	कोवाडो
ओझो	कोकम	कोसर
ओडकार	कोयल	कोहाडी
ओधाण	कोगलो	कोलवाइ
ओरत	कोटवाल	गोलवालो

(१२)

पाठ ११ मो. औ वाला शब्दो.

गौतम	टौको	यौवन
औषध	नौका	लौकिक
कौवच	नौतम	गौचर
कौतक	फौजदार	चौटु
गौशाला	भौम	औदिच
गौमुखी	भौतिक	कौवत
चौदस	मौन	कौमुदी

पाठ १२ मो. अं वाला शब्दो.

अंतरीक्ष	बंदीखानुं	वांसकपूर
अंतरंग	भांजगड	वांधो
अंतराय	मांदगी	वांसडो
अंधकार	मांजरु	वांसफोडो
खांडकंकु	रांडीरांड	हांसल
पंचातनामुं	लांचखोर	हांफण
पंचांगुली	लोंकडी	अंतकाल

रामः	जनकः	अतिथिः
कूपः	योधः	रविः
बिडालः	रावणः	सारथिः
शठः	निधिः	मणिः
नमः	वीरः	विधिः
देहः	अगदः	गजः

बीजो कको.

क र्क ग घ ङ च छ ज्ञ क्ष प्र थ

௧ 10-14 301 10 ௧: 224 219 ௪௪ ௪௪ ௪௪ ௪௪ ௪௪

उज्ज्वल लाल रंगे पण तू ह ज्ञान प्य

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

फफ ङब भम म्म य्य रर ल्ल व्व शश षष स्स ह्

ક્રક્ર બબ ભભ મમ ય્ય રર હ્રિ ઓ શશ ષ્ષ સસ ઉઉ

(१४)

पाठ १४ मो.

सिद्धाणं
उवज्झायाणं
सव्वसाहूणं
नमुक्कारो
सव्वपाव
प्पणासणो
सव्वेसिं
उवसग्गहरं
कम्मघणमुक्कं
विसनिन्नासं
तस्स
दुखदोगच्चं
सम्मत्ते
लद्धे
कप्पपायवप्पहिण्
तुहप्पभावओ
अविग्घेणं
भत्तिप्परनिप्परेण
निव्वाणी

पत्ताणं
सव्वासिव
लद्धिपत्ताणं
सव्वोसहि
जरकराय
ररकंतु
जिणभत्ते
पन्नत्ती
वज्जासिंखला
वज्जांकुसि
चक्केसरि
नरदत्ता
वइरुद्धा
अच्छुत्ता
छम्मुह
किन्नर
गंधव्व
जरिंकदो
अच्चुअ

अन्नेवि
संघस्स
मज्झवि
सम्मदिट्ठि
सव्वोवद्दवरहिओ
तवगह्वगयणदिण-
तिजयपहुत्त(यर
अदत्तादान
असज्झाइ
पाडिहेरजुत्ताण
समयरिक्कित्त
चक्कं
पन्नरस
पन्नास
भत्तिजुत्ताणं
पन्नत्तरी
सित्तिरि
पणपन्नायदसेवय
पन्नट्ठी

कम्मभूमिसु
 उप्पन्नं
 रयणाइवन्नो
 पयत्तेणं
 कप्पूरेणं
 मुग्गं
 निब्भंतं
 निच्चमच्चेह
 वुच्छं
 निबुद्धु
 विवन्न
 लायन्ना
 फुलिंगनिद्वह
 सव्वंगा
 बुद्धियह्वाया
 लहिं
 दह्वा
 पत्ता
 दुव्वाय

उब्भट
 कल्लोल
 जाणवत्ता
 मुक्कवावारे
 निच्चं
 उध्धुय
 डधुंत
 मुध्ध
 निव्वाविअ
 उग्गभुअंगं
 मन्नंति
 परिच्छूढ
 नामरुखर
 सिद्ध
 भिल्ल
 तक्कर
 सद्दूल
 सद्द
 वुन्न

अविलुत्त
 मत्त
 सिग्धं
 विग्घा
 इच्छियं
 पज्जलिअ
 कुद्धंपि
 माणिक्क
 पडिमस्स
 उल्लास
 बुद्धिय
 उच्छाहं
 अच्चासन्नंपि
 समद्वीणा
 समरम्मि
 तिरुखखग्ग
 अभिग्घाय
 पविद्ध
 विणिभिन्न

(१६)

पाठ १६ मो.

मुक्क
सिक्कार
दप्पुद्धर
प्पभावेण
संकित्तणेण
सच्चाइं
जिणिंदस्स
कल्लाण
जरक
ररकस
दुस्सउण
माणतुंगस्स
भुवणच्चिअ
उवसगंते
एअस्स
अट्टत्तर
सव्वे
महप्पभावे
पुरिसुत्तम

जिणुत्तम
कम्म
विमुखवरं
सिद्धि
अजिअस्स
निव्वुइ
दुखववारणं
विमग्गह
जिणुत्तम
मुत्तम
नित्तम
सत्तधरं
अज्जव
मइव
विमुत्ति
पुव्व
पसह्व
लख्खणो
चक्कवट्ठि

जो बावत्तरि
सहस्स
वत्तीसा राय
मग्गो
सहस्स
भारहम्मि
वेट्ठुं
इरकाग
उत्तम
चित्तलेहा
रुप्प
पट्ट
निद्ध
सत्ति
मुत्ति
जुत्ति
गुत्ति
दित्त
प्पभावणे

(१७)

पाठ १७ मो.

पवत्तयं
रुग्गय
सप्पभं
दिब्ब
रकुभिअ
विउत्ता
भत्ति
सुजुत्ता
उत्तम
खित्तयं
वज्जिअं
चित्तरकरा
जस्स
सुविक्रमा
अप्पणो
उरुण
पत्तलेह
चिच्छएहिं
भत्तिसान्निविट्ठ

जस्स
जगुत्तम
भत्तिवसागय
सदहवा
लज्जाबु
सज्जा
देवनट्टिआहिं
विप्पम
नच्चिऊण
सव्वसत्त
छत्त
सिरिवच्छ
समुद
चक्क
कम्म
मुरक
परिकअ
चाउम्मासिअ
संवच्छरिण

भणिअवो
सव्वेहिं
सोअवो
उवसग्ग
पुव्वुप्पन्ना
इच्छह
कित्तिं
तेलुक्कुद्धरणे
तत्त्व
चित्त
उद्धत
तच्चारुचूत
थीणद्धी
नरकानुपूर्वी
तिर्यंचानुपूर्वी
देवानुपूर्वी
उच्छवासनामकर्म
उच्चैर्गोत्र
पडुच्च

(१८)

त्रीजो कको.

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व श ष स ह
प्र फ्र ब्र भ्र म्र य् रल् व्र श्र ष् स् ह्र

पाठ १८ मो.

भ्रांति	अग्र	त्राता	मैत्री
भ्रमत्	व्रत	निष्परिग्रहं	आरात्रिकं
प्रभा	प्रदीपं	तीव्रवेदना	श्रेयांस
वक्त्रं	श्रुतं	संक्रांत	मोहनिद्रा
वर्द्धमानः	सकलार्हत्	चंद्रमाः	मूत्राशय
अर्णवः	शिवश्रियः	अंघ्रि	समुद्रेंदुः
प्रस्पार्द्धिभिः	त्रयीशानं	पद्मप्रभप्रभोः	नेत्रयोः
क्रमान्	प्रणिदध्महे	श्रियं	श्रीमान्
प्रसूतं	त्रिजगज्ज्ञानं	जिनेंद्राय	त्रास
चित्रं	अनुक्रम	महेंद्रं	संश्रिता

भद्रं	प्रतिष्ठा	स्त्रीणां	नोलदुमाणि
प्रदीपानलो	वस्त्रं	ब्रह्माणं	विग्रहं
शत्रुंजयः	स्तोत्राणि	प्रवदंति	प्रदेश
चित्रकूटादयः	गोत्राणि	छत्रत्रयं	पत्र
प्रस्तुतं	मंत्रान्	प्रतापं	ध्रुवं
यात्रायां	प्रयांतु	भ्रमद्	प्रपूरितं
प्रभावात्	सर्वत्र	भ्रमरनाद	सालत्रयेण
स्नात्रपीठे	प्रसन्नतां	प्रकर	श्रयंति
प्रीयंतां	प्रधानं	क्रमगतं	परत्र
मुनिसुव्रत	प्रणमामि	आक्रामति	दध्रे
प्रवेश	त्रिधा	व्रजति	प्रेतव्रजः
प्रज्ञसि	प्रणतं	मृतेः	पवित्रमंत्रे
वज्रांकुशी	प्रथमं	संग्राम	प्रविलोकितः
अप्रतिचक्रा	नक्रचक्रं	अजस्रं	दुःखपात्रं
ग्रहाः	श्रुतवतां	प्रदं	प्रतिफलंति
ग्राम	सहस्र	तीव्रतम	प्रणिधानं
कलत्र	आश्रितं	प्रीणाति	त्रायस्व
शत्रवः	शुभ्राः	मात्रे	चंद्र
श्रमणसंघ	विभ्राजते	प्रपन्नाः	प्रभास्वराः
आम्रफल	नम्रैः	अमुत्र	प्रपद्यन्ते

प्रधान	प्रकाशितं	अन्यमंत्रैः	कर्त्री
भ्रातं	पात्रपूजा	मतिभ्रमः	नक्षत्राणां
क्रोधमयेन	श्राद्धधर्मः	प्राज्ञ	प्रकाशः
ग्रस्तः	स्फुटशर्मदे	प्राणः	प्रातिहार्य
रत्नत्रयं	कल्पद्रुम	प्रायः	क्रियापदं
भवभ्रमेण	स्फुरत्प्रभा	प्रोत्साहः	निरुपद्रव
प्रमाद	रत्नं	प्रौढ	प्रयोजन
निद्रा	श्रेयस्करं	व्रीहिः	अभयप्रदं
बुवे	प्रार्थये	क्रीडा	स्तोत्राणि

चोथो कको.

कृ	खृ	गृ	घृ	ङृ	चृ	छृ	जृ	झृ	ञृ	हृ
कृ	पृ	गृ	घृ	ङृ	चृ	छृ	जृ	झृ	ञृ	हृ
कृ	ङृ	हृ	णृ	तृ	थृ	दृ	धृ	नृ	पृ	फृ
हृ	हृ	हृ	लृ	तृ	थृ	दृ	धृ	नृ	पृ	हृ
बृ	भृ	मृ	यृ	ऋ	लृ	वृ	शृ	षृ	सृ	हृ
भृ	लृ	भृ	यृ	ऋ	लृ	वृ	शृ	षृ	सृ	हृ

(२१)
पाठ १९ मो.

उन्मृष्टं	प्रभृति	मृतः	विकृति
भृतेः	बृहस्पति	धृष्टः	अकृशतापनाः
कृतः	भ्रातृ	पुष्पवृष्टिः	सुखभृतां
वृषभैः	सुहृदः	नृभवं	स्पृष्टमात्रः
आकृतिः	गृहे	सुकृतं	हृत्वा
पृथिवीनाथं	अलंकृतः	भृशं	हृदन्नाः
अमृत	नृत्यन्ति	कृजपाथः	स्पृहार्तिः
तीर्थकृत्	सृजन्ति	नृप	साधुवृत्तात्
मृगलक्ष्मा	बृहच्छांति	विषहृत्	हृद्गार्त्तिनि
मनोवृत्तिः	भृगुपुरे	नन्दवृत्तैः	गृह्यते
कृपा	संहति	कृतज्ञः	धृततनुः
प्रवृत्तं	प्रदत्तः	नृपतिः	प्रकृति
धृतिः	मृगः	तृणवत्	आवृत
अकृत्रिमानां	दृष्ट्वा	पृणातु	सकृदपि
हृदया	विवृद्धशोभं	स्पृहाणां	विधृतः
शृणुत	यादृक्प्रभा	मृतिका	शृंखला
गृहीत्वा	निर्वृतिपुरीं	तृषा	विवृद्धशोभं
शृंगे	हृदयं	वृद्धिकरः	तृष्णया
कृत्वा	मृत्युं	कृतवान्	वृणुते

भृष्टचणकान्	अन्यभृतं	अकृत	वृषभः
अतिगृध्नुः	जाड्यहृतये	दृढतरं	पृष्टिकी
गंधातितृट्	भूभृत्	मृत्कर	तृणफास
सुखभृतां	वृष्टः	मृत्वा	पूर्वकृत
विकृतिं	कृषीवलः	तृषं	वक्तृत्व
वृद्धि	गृहपतिः	मृगावती	कृतिका
मृषा	पृथुः	धनगृहपति	मृगशिर
शशचृत्	वैयावृत्य	गणभृत्	विद्वज्जन

पांचमो कको.

क्य	ख्य	ग्य	घ्य	ङ्य	च्य	छ्य	ज्य
उ्य	भ्य	ज्य	ध्य	ऌ्य	र्य	ऋ्य	न्य
इय	झ्य	ट्य	ठ्य	ड्य	ढ्य	ण्य	त्य
अ्य	ज्य	ट्य	ठ्य	ड्य	ढ्य	ण्य	त्य
थ्य	द्य	ध्य	न्य	प्य	फ्य	ब्य	भ्य
थ्य	द्य	ध्य	न्य	प्य	फ्य	ब्य	भ्य
म्य	र्य	र्य	ल्य	व्य	श्र्य	ष्य	स्य
भ्य	र्य	र्य	ल्य	व्य	श्र्य	ष्य	स्य
		ह्य	ळ्य	क्ष्य	झ्य		
		ह्य	ळ्य	क्ष्य	झ्य		

सम्यक्	आद्यं	सामान्यतो	माणिक्य
प्रणम्य	तुभ्यं	आकरस्य	दिव्य
बुद्ध्या	उद्यत्	अचिंत्यम-	दैत्येन
समुद्यतमतिः	प्रख्यापयत्	हिमा	धन्याः
आरभ्यते	परस्य	अभ्यागते	अकृत्याः
द्युतिं	ग्रहणस्य	चंदनस्य	मन्ये
तुल्याः	श्चद्योतत्	मध्यभाग	अन्यथा
अन्यत्र	शोच्यां	मुच्यंते	प्रोद्यत्
गम्यः	मर्त्याः	विध्यापिता	भक्त्या
नित्योदयं	तुल्यः	ध्यानात्	भावशून्याः
विद्योतयत्	सद्यः	भव्यैः	कारुण्य
त्वयि	तस्य	विभाव्यसे	पुण्य
मन्ये	भक्त्या	अभ्युद्गते	आसाद्य
अन्या	कल्याणमंदिरं	भव्याः	वध्यः
आदित्य	अवद्य	मन्ये	निःसंख्यः
उपलभ्य	करिष्ये	अवनम्य	शरण्यं
अव्ययं	यस्य	श्यामं	वंद्य
अचिंत्यं	जिनेश्वरस्य	अभ्युपेतः	आरोग्य
असंख्यं	अभिनम्य	उद्योतितेषु	त्रायस्व

पाठ २१ मो.

समागत्य	उद्यम	लेणपुण्य	मिथ्यात्व
निशम्यतां	असत्यमनो-	लज्जावंत	मनपुण्य
पुण्याहं	योग	वासुपूज्य	मिथ्यात्वश-
उद्योतकराः	उपाध्यायकाः	वसुपूज्य	ल्य
विद्यादेव्यः	ऐरण्यवृत्त	श्यामा	मिथ्यादृष्टि
नित्यं	कायपुण्य	शुक्लेश्या	मध्यस्थ
उपाध्याय	कापोतलेश्या	शुक्लध्यान	हास्यरस
चातुर्वर्ण्यस्य	ज्योत्स्ना	यथाख्यात	अभ्याख्यान
अन्ये	तेजोलेश्या	सत्यमनोयोग	अच्युतदेव-
अनित्यं	द्रव्यनिक्षेपो	सेणपुण्य	लोक
मांगल्यं	द्रव्यानुयोग	सौम्यदृष्टि	अन्यलिङ्ग-
शाम्यंतु	ध्यान	व्यवहारम-	सिद्ध
अभ्यर्चित	धर्मध्यान	नोयोग	असंख्यात
नामग्रहणं	मनुष्य (ण्य	वचनपुण्य	अभ्यास
पुरमुख्याणां	नमस्कारपु-	वैयावृत्य	अन्यदर्शनी
व्याहरेत्	नीललेश्या	वाणव्यंतर	पल्योपम
दातव्यं	पुन्यतत्त्व	व्यवहारनय	व्यावृत्त
कल्याणभाक्	पानपुण्य	व्यंतर	सम्यग्दर्शन
छिद्यंते	मनुष्यगति	विद्युतकुमार	न्याय

सम्यक्त्वमो-	मनुष्यानुपूर्वी	सत्य	त्रैलोक्य
हनीय	उद्योतनाम-	व्याघ्र	धान्यपालक
मिथ्यात्वमो-	कर्म	मत्स्य	समस्या
हनीय	दुभाग्य	मद्यपान	ज्येष्ठा
न्यग्रोध	सम्यक्त्व	शांडिल्य	पुष्यति
आदित्य	रम्यक्	वाणव्यंतर	सामान्य

पाठ २२ मो. जोडा अक्षरना शब्दो.

पुष्पैः	जगद्गुरुः	भास्कर	निन्दितः
गन्धैः	निष्फलः	अष्टदलस्थ	आप्नुयात्
वस्त्रैः	निर्विकल्पः	मन्त्रराज	रिपुघ्न
शनैश्चर	अनन्तः	वेष्टितं	स्तोत्रं
पार्श्वयोः	शिवात्मकः	अग्रस्थ	प्राप्नोति
तिष्ठन्तु	व्यक्तरूप	चतुष्कोण	स्नातस्य
तुष्टि	स्फटिक	अङ्क	विस्मय
पुष्टि	स्वयंभूः	प्रतिष्ठितः	अप्सरसां
परमशक्तिः	ज्ञानात्मा	निर्मुक्तः	द्वादश
विघ्नहरः	स्थितिः	संस्तुतः	बह्वर्थयुक्तं
स्वामी	मुक्ति	चिन्तामाणि	निष्पंक
परब्रह्म	समाधिष्ठित	आस्पदम्	सप्ततिशतं

पाठ २३ मो.

निश्चित	वारिप्लवा	साध्वी	कश्चित्
यशस्वी	स्वोचितं	दुःखतप्त	स्फुरत्
स्वस्ति	अद्भुत	गोष्ठिक	पुरस्तात्
श्वापद	बाष्प	स्वाहा	उज्ज्वल
स्तवः	अर्चित	तुम्ह नयर	ज्वलित
विघ्नवल्लयः	अष्टापद	अम्ह	उत्फण
अधिष्ठान	क्लेश	भक्तामर	निरस्त
जगत्पति	विध्वंस	स्तोष्ये	स्मरण
पुष्पान्तु	समस्त	स्तवन	भुग्नाः
भास्वते	जन्म	दुग्धसिंधु	ध्वजः
माहात्म्य	महोत्सव	यद्वासरे	स्मरन्तः
स्याद्वाद	प्रज्ञप्ति	कल्पांत	द्विपेद्र
विश्व	अचलुप्ता	कृत्स्नं	स्वाध्याय
ज्योत्स्ना	स्कंद	स्पष्ट	विस्तरः
लक्ष्मी	स्वजन	निष्पन्न	अस्तु
पंजर	सूरिन्द्रः	मूर्ध्नि	स्थितः
पञ्च	भूशय्या	वृन्दः	पश्चिम
मङ्गल	अर्हन्त	द्वेषी	ओष्ठ

પદ્મ	કિશ્ચિય	સત્ત્વ	પરમેશ્વર
જિહ્વા	વાચ્છિતે	નમસ્કાર	નિરઙ્ગજનઃ
સુપાશ્વ	અઙ્ગ	પરમાત્મા	મસ્તક
દ્વય	અન્વિત	મક્તોપવાસ	જન્મલગ્ને
અસ્થિ	જિનેન્દ્ર	બ્રહ્મચર્ય	શિવંકરઃ
પૃષ્ઠ	મક્ત્યા	ષળમાસ	અષ્ટોત્તર
જહ્લ્ધ	શક્તિ	પરમેષ્ઠી	ત્રિસન્ધ્યમ્
આશ્ચર્ય	વિઘ્ન	જિતેન્દ્રિયઃ	કાશ્વન

પ્રાણાતિપાતવિરમણ વ્રત ઉપર

વજ્રાયુધની કથા

કાંચનપુરને વિષે શ્રી વજ્રાયુધનામા રાજા રાજ્ય કરે છે. તે મહા પરાક્રમી હોવાથી શરણે આવેલા જીવોની રક્ષા કરવામાં કુશલ હતા. તેથી તેનું નામ જગતમાં વજ્રપંજર કરી સૌ કહેતા હતા. એક દિવસ સભાને વિષે ઇંદ્રમહારાજે તેનું દયાધર્મ સંબંધિ પરાક્રમ વર્ણવ્યું. તે વાતમાં અશ્રદ્ધા રાખનારા બે દેવતા-૭ પ્રત્યક્ષ પરાક્રમ જોવાને માટે આવ્યા. તેમાં એક જણે પારેવાનું રૂપ ધારણ કર્યું અને એક જણે સીંચાણ

पक्षीनुं रूप धारण कर्युं. तेमां पारेवानुं रूप धारण कर-
 नार देवता, मारी रक्षा कर, मारी रक्षा कर, एवां वचन
 बोलतो वज्रायुधना खोळामां आव्यो. पछवाडे सीं-
 चाण पक्षीना रूपने धारण करनार एवो देव बोढ्यो
 के, ए मारुं भक्ष्य छे ते तुं मने आप; एम बोलतो
 बोलतो आव्यो अने कहेवा लाग्यो के हे राजन् !
 तने क्यां दया छे ? केमके मारुं भक्ष्य जे पारेवुं पक्षी
 तेने तें ग्रहण कर्युं. तेने राजाए कछुं के, तने जे रुचे
 ते तुं खावानुं माग. त्यारे सींचाणे कछुं के, मांस
 विना मने कांश् रुचतुं नथी, माटे मांस मने तुं आप.
 त्यारे राजाए पोताना अंगनुंज छेदन करीने मांस
 अर्पण करवा मांडयुं. ते पछी त्राजवुं मंगावी, एक
 त्राजवामां पारेवाने बेसाडयुं अने एक छाबडामां
 पोते बेठो. एवुं तेनुं साहस तथा शरणागतरक्षणत्व
 जोइने देवता तुष्टमान थया अने प्रत्यक्ष थइ कहेवा
 लाग्या के, तारी कीर्ति अमे इंद्र महाराज पासे सां
 भळी, पण ते वात उपर अमोने श्रद्धा न थइ तेथी
 तारी पासे प्रत्यक्ष पारखुं जोवा आव्या. परंतु शर-

णागतना रक्षणमा प्राण खोवा माटे पण तुं उत्कं-
ठित थयो; एम कहीने ते देवता देवलोकमां गया.
ते राजा वजायुधना भयथकी स्वल्पकाळे श्री शां-
तिनाथनामा सोलमा तीर्थकर थया.

बीजा मृषावादविरमण व्रत उपर
कालिकाचार्यनी कथा.

तुरमिणी नगरीने विषे दत्तराजाना मामा का-
लिकाचार्य आव्या. तेमने एक दिवस दत्तराजाए पू-
छयुं के महाराज ! यज्ञ करवानुं शुं फळ छे ? त्यारे गु-
रुए कह्युं जे, एमां हिंसा होवाथी महा पाप थाय छे.
त्यारे दत्तराजाए कह्युं के महाराज ! हुं पूछुंछुं तेथी उ-
लटो जवाब शा माटे आपोछो. हुं तो यज्ञ करवाथी
फळ शुं थाय ? एम पूछुं छुं. तेने गुरुए कह्युं के, नर-
कमां जवुं, एज यज्ञनुं फळ छे. वली राजाए पूछयुं
के, त्यारे हुं मरीने क्यां जइश ? गुरुए कह्युं, तुं नर-
कमां जइश. ते सांभळी क्रोधायमान थइने राजाए
पूछयुं के, तमे मरण पामीने क्यां जशो ? तेवारे गु-
रुए कह्युं के, हुं स्वर्गमां जइश. तेवारे राजाए पूछयुं,

महारुं आयुष्य केटहुं छे? तेने गुरुए कह्युं के, सात दिवसनुं तारुं आयुष्य छे. ते सांभळी राजा गुरुनी पासे सीपाइओनी चोकी राखीने पोताने घेर जइ बेसी रह्यो. सातमे दिवसे प्रधानोए दत्तराजाने राज्य उपरथी ऊठाडी, तेलनी कडाइमां नाखी, तेनुं शरीर पचावीने कुतराने भक्षण कराव्युं. ते मरीने नरके गयो. गुरु पासे बेसाडेला सीपाइओ नाशी गया. ए रीते कालिकाचार्यने प्राणांत कष्ट प्राप्त थयुं तो पण असत्य भाषण न कर्युं माटे मरणांते पण असत्य बोलवुं नहीं.

त्रीजा अदत्तादानविस्मण व्रत उपर दृढप्रहारीनी कथा.

काकंदीपुरीने विषे सुभद्रनामा श्रेष्ठी वसे छे. तेनो पुत्र दत्त करीने हतो. तेने बालपणमांज तेना पिताए सर्व शास्त्रो भणाव्यां; वळी तेने परणाव्यो. अनुक्रमे ते जुगार रमता दुष्ट मनुष्यना संगे करी चो-

र थयो. लोकमां दृप्रहारी एवे नामे विख्यात थयो. एक दिवसे कोइएक ब्राह्मणना घरमां चोरी करवा पेठो, त्यारे ते ब्राह्मण जागतो हतो माटे चोरना पछवाडे दोडयो; तेने चोरे खड्गे करी मारी नाख्यो. तेवारे ते ब्राह्मणनी स्त्री सगर्भा हती ते बूमो नाखती चोर पासे आवी, तेने पण चोरे मारी नाखी. पछी चोरीमां अंतराय करनारी ते ब्राह्मणनी गाय बहार ऊभी हती, ते शींगडे करी चोरने मारवा लागी; तो तेने पण चोरे मारी नाखी. एवामां ब्राह्मणीना पेटमांथी नीकळीने पृथ्वी उपर लोटता बाळकने जोइने ते चोरना मनमां दया आवी अने अत्यंत वैराग्य उत्पन्न थयो. तेवारे विचार्युं जे अरे ! में पापिष्टे आ केवुं पापकर्म कर्युं ? अरे धिक्कार होजो मुज दुष्टने ! एम पश्चात्ताप करतो, करेलां पापने वारंवार स्मरणमां लावतो, अन्न तथा जळ बेहुनो त्याग करीने तेज पुरना मार्गने विषे कायो-त्सर्ग करी ऊभो रह्यो. ते नगरना लोकोए तेने दुष्ट हत्यारो जाणीने लाकडीना तथा पाषाणना प्रहार

करी मायों, तोपण समता धारण करी रह्यो अने छ मा-
समां कर्मोंनुं उन्मूलन करी केवळज्ञान पामी सि-
द्धिने प्राप्त थयो. माटे चोर पण शांतिए करीने
सिद्धिने पाय्यो, तो बीजा जन पामे तेमां तो शुंज
आश्चर्य ?

चोथा मैथुनविरमण व्रत उपर सुदर्शन शेठनी कथा.

चंपानगरीमां दधिवाहन राजाने अभया ना-
मे राणी छे. ते नगरीमां सुदर्शन नामे शेठ वसे
छे. तेने देवांगना सरखी मनोरमा नामे स्त्री छे.
तेने पांच पुत्रो छे. एकदा सुदर्शनशेठनुं रूप जो-
इने अभया राणी अनुरागिणी थइ, त्यारे शेठने
तेडवा माटे पोतानी सखीने मोकली. शेठने बुद्धि
उपनी तथा कह्युं के, हुं नपुंसक छुं, माटे ए काम
करवाने शक्तिमान् नथी. दासीए पण ते प्रमाणेज
राणीने कह्युं. वळी एकदा शेठना पुत्रोने मार्गे जता
जोइने राणीए विचार्युं के, नपुंसकने संतति होय

નહીં માટે શેઠે મને છેતરી છે, તો હવે એનો ફરીથી ઉપાય કરીશ. એક દિવસ કોઈ કાર્યનિમિત્તે શેઠને ઉપાડી લાવીને રાણીએ પ્રાર્થના કરી. તે શેઠે ન માની ત્યારે તેણે સ્ત્રીચરિત્ર કરી બૂમો પાડી જે, શેઠે મારી લજ્જા લીધી. એવો હોકાર કરવાથી રાજાએ શેઠને શૂઠ્ઠીએ ચઢાવ્યો. ત્યાં શીલના પ્રમાવથી શૂઠ્ઠી તે સિંહાસનરૂપ થઈ. પછી રાજાના સેવકોએ સ્વર્ગના પ્રહાર કયા તે મુકુટ, કુંલડ, હાર, બાજુબંધાદિક આભૂષણરૂપ થતા હતા. એ રીતે કષ્ટ પડતાં પણ શેઠે અંગીકાર કરેલું શીલવ્રત ન મૂક્યું.

—◆—
પરિગ્રહપરિમાણવ્રત ઉપર મમ્મણશેઠની કથા.

—◆—
રાજગૃહી નગરીએ શ્રેણિક રાજા રાજ્ય કરે છે. એક દિવસ ચેલણા રાણી ગોસ્વમાં બેઠાં હતાં, તેવામાં અર્ધ રાત્રને સમયે અત્યંત પવને યુક્ત વરસાદ વરસવા માંડ્યો, તથા નદીએ પૂર આવ્યું. તે વારે

નદીમાં તળાતાં એવાં લાકડાંઓને બહાર ખેંચતાં એવા
 કોઈ વૃદ્ધ પુરુષને વિજ઼ીના ઉદ્યોતે કરીને રાણીએ
 દીઠો. તે વારે શ્રેણિક રાજાને રાણીએ કહ્યું કે મહારાજા!
 મેઘરાજાની પેઠે તમે પણ ભરતામાંજ ભરો છો, પરંતુ
 જુઓ આવા દુઃખી દરિદ્રી આપણા નગરમાં વસે છે.
 • તેના ભરણપોષણની તમે ચિંતા પણ કરતા નથી.
 વાહ ! તમારું આ તો મોટું ચાતુર્ય માસે છે. તદનંતર
 શ્રેણિક રાજાએ પણ તળાતાં કાષ્ઠોને ખેંચનાર વૃદ્ધ
 પુરુષને ગોઠવમાંથી જોયો, તેથી તેને બોલાવ્યો અને
 પૂછ્યું કે અરે તું કોણ છે? ત્યારે તે બોલ્યો, હું વણિક
 છું, મારું નામ મમ્મણ છે. મારે એક બઢદ સુવર્ણ-
 રત્નનો છે અને વીજો બઢદ મેઢવવા માટે આ કામ
 કરું છું. તે પછી કૌતુકયુક્ત થઈને શ્રેણિક રાજાએ
 ચેલણા રાણીની સાથે જઈ તે મમ્મણશેઠના ઘરમાં
 ત્રીજી ભૂમિને વિષે સુવર્ણ અને રત્નસમૂહથી જડેલા
 એવા શીંગડાવાલા બે વૃષભોને નજરે દીઠા. તે જોઈને
 શ્રેણિક રાજા ચેલણા રાણીને કહે છે કે, હે સ્ત્રી !

आवी समृद्धि मारा भंकारमां पण नथी. वळी ते श्रेणिक राजा मम्मणशेठने पूछे छे के—एटली समृद्धि छतां तमो नदीमांथी काष्ठने शा माटे खेंची लावो छो ? त्यारे मम्मणशेठे कह्युं के हे राजन् ! आ काष्ठोनां रत्न थशे. त्यारे राजाए कह्युं के, थोडी किम्मतनां काष्ठोए करी रत्न ते केम थाय ? त्यारे तेणे कह्युं के, आ बावनाचंदननां घणी किम्मतनां काष्ठो हुं लउं छुं. ते वात सांभळी आश्चर्य पामीने राजा तथा राणी बेहु पोताने घेर गयां. ए रीते जन्मपर्यंत मम्मण-शेठे छते धने कौईने कांड पण आप्युं नहीं, तेम खाधुं वापर्युं पण नहीं.

छट्टा दिशिपरिमाणव्रत उपर चारुदत्तनी कथा.

मिथिलापुरीने विषे भीमक शेठनो पुत्र चारुदत्त नामे हतो. तेने परणाव्या पछी तेना पिताए चतुराईने माटे वेश्याने घेर मूक्यो. तेणे वेश्याना

व्यसने करी पोतानुं घर पण छोडयुं. तेना पिताए मरती वखते ते चारुदत्तने बोलावीने कहुं के, हे भाइ ! जन्मपर्यंत तैं मारुं वाक्य पाळ्युं नहीं. हवे बीजुं कांइ कहेतो नथी, परंतु एटलुंज कहुं छुं के, कष्टना वखतमां नवकारनुं स्मरण करवुं; एम कहीने चारुदत्तनो पिता मरण पाम्यो. पछी तेनुं द्रव्य बधुं क्षीण थइ गयुं, ते वारे निर्धन थको पृथ्वीमां भमतां भमतां ते चारुदत्तने कोइ योगी मल्यो. तेणे सुवर्ण-रस लेवा माटे रसकुपिकामां तेने नाख्यो. त्यां कुपि-कामां मरण पामता एवा कोइ पुरुषने तेणे नवकार संभळाव्यो अने पोते चंदनघोने पूंछडे वळगीने कुवामांथी बाहेर नीकली पोताना मामाने गाम गयो. तिहां मामाए अने पोते कपास ग्रहण कर्यो. ते कपा-सने अरण्यमां लइ जता हता तेवामां दावाझिए करी कपास बळीने राख थइ गयो. पछी मामो कहेवा लाग्यो जे, आपणे एक चामडानी धमणमां प्रवेश करीने रहीए तो मांसना लोभी भारंड पक्षीओं

आपणने उपाडी उडीने सुवर्णद्वीपमां लइ जशे. तिहां
 सुवर्ण ग्रहण करीशुं. एम कही मामाए पोताना ली-
 धेला बे बकराने मारवा मांडया तेने चारुदत्ते वार्यो,
 तोपण मामाए सांभळ्युं नहीं. चारुदत्ते पोताने बे-
 सवा माटे मामाए जे बकरो आप्यो हतो तेने म-
 रती वखते नवकार संभळाव्यो. पछी मामो भाणेज
 बेहु जण ते बकराओनी खालनी धमणमां बेठा, ते वारे
 भारंभपक्षीए ते बेहुने मांसनी भ्रांतिथी उपाडी लीघा,
 ते सुवर्णद्वीप लइ जइ नाख्या. त्यां खालमांथी नीकळीने
 ते चारुदत्त एक मुनि पासे गयो. जेवामां ते गुरुनी
 पासे बेसे छे तेवामां एक देदीप्यमान कांतिए बिरा-
 जमान देवता तिहां आव्यो. तेणे प्रथम चारुदत्तने
 वांदीने पछी मुनिने वंदन कर्युं. ते जोइ कोइ बीजा
 त्यां बेठेला पुरुषे मुनिने पूछ्युं, महाराज! आ देव-
 ताए प्रथम चारुदत्तने वांदी पछी मुनिने वंदन क-
 रवारूप विपरीत वर्त्तन केम कर्युं? गुरुए कह्युं,
 पूर्वले भवे आ देवताना जीवने एणे नवकार संभ-

ळाव्यो हतो, तेना प्रभावथी ए देवता थयो छे, माटे ते एनो गुरु होवाथी एणे चारुदत्तने प्रथम वंदन कर्युं. पछी चारुदत्तने ते देवे केटलुं एक द्रव्य आप्युं अने पाछो तेने स्वस्थानके पहाँचाडयो. अर्थात् ए चारुदत्त जोके बहुलकर्मी हतो, परंतु तेणे पोताना पिताना उपदेशथी नमस्कार आपवानो नियम राख्यो, तो ते पाछो सुखी थयो, अने देवताए पण पूर्वजन्मनो गुरु मानीने तेने नमस्कार कर्यो.

७ मा भोगोपभोगविस्मण व्रत उपर वंकचूलनी कथा.

विंध्यपल्लीने विषे वंकचूल राजा राज्य करे छे. त्यां एक दिवस धर्मघोषसूरि आवीने चोमासुं रह्या, परंतु राजाना आदेशे करी कोइने धर्मोपदेश न देता हवा. चोमासुं वीत्या बाद धर्मघोषसूरिए विहार कर्यो. तेमने वळाववा माटे परिवार सहित केटलीक

भूमी सुधी वंकचूलराजा आव्या. पाछा वळतां वंक-
चूलराजाने धर्मघोषसूरिण चार नियमो आप्या. तेमां
प्रथम अजाण्या फळनुं भक्षण न करवुं, बीजो क्रोध
चडे त्यारे साडा त्रण डगलां पाछा फरीने पछी प्रहार
करवो, त्रीजो राजानी पट्टराणीने मातानी पेठे मा-
नवी अने चोथो काकमांस भक्षण करवुं नहीं, एवा
चार नियम ग्रहण करी राजा पाछो वल्यो. एक
दिवस वंकचूले किंपाकफळने अजाण्यां फळ जाणीने
न खाधां अने तेना परिकरे ते फळ खाधां, तेथी सर्व
परिकर यमने घेर प्होंच्यो. वळी एक दिवस वंक-
चूल ग्रामांतरथी अर्ध रात्रीण पोताने गाम आव्यो.
तिहां पोतानी स्त्रीना पडखामां कोइक पुरुषने सूतेलो
जोइने तेने साडात्रण पगलां पाछो फरीने प्रहार क-
रवा जतां ते तरवार पाटडे अथडावाना पडघाथी ते
वंकचूल राजानी बेन पुरुषनो वेष धारण करीने सूती
हती ते जागी गइ. तेणीण आशीर्वाद दीघो. ते
वारे ते चिंतववा लाग्यो के अहो ! में जाण्युं जे, कोइ

पुरुष मारी स्त्रीनी साथे सूतो छे, पण आ तो मारी बेन पुरुषवेष धारण करीने सूती छे, एम तेने पश्चात्ताप थयो. तदनंतर एक दिवस ते वंकचूल कोइ-एक नगरने विषे राजद्वारमां पेठो. तेने अत्यंत सुकुमार जोइने ते नगरना राजानी पट्टराणीए कह्युं के, तुं मारो उपभोग कर; तेम तेणे प्रार्थना करी, तो पण तेणे ते काम कर्युं नहीं. वळी प्रहारनुं दुःख मटाडवा वैद्यना कहेवा प्रमाणे काकर्मास भक्षण न कर्युं. तेने अंते जिनदास श्रावके अनशन कराव्युं, ते नियमना प्रभावथी ते वंकचूल स्वर्गने विषे देवता थयो. माटे एक पण नियम पळे तो तेथी कदापि मोक्षसुख न मळे तोपण स्वर्गप्राप्ति तो निश्चे ते प्राणीने थायज, तेमां संदेह जाणवो नहीं, माटे सर्व जने परिग्रहनुं परिमाण करवुं.

८ मा अनर्थदंडविरमण व्रत उपर अशोकचंद्रनी कथा.



राजगृही नगरीने विषे अशोकचंद्रराजा राज्य करे छे. ते राजानुं बीजुं नाम कोणिक करीने पण हतुं. तेणे पूर्व जन्मने विषे तापसपणामां मासक्षपणादि उग्र तप तप्यो हतो, तेना पुण्ये करी आ लोकने विषे मोटा राज्यने प्राप्त थयो. एक दिवसे चमरेंद्रे ते कोणिकराजाने त्रिशूल आप्युं, तेना प्रभावथी बीजा राजाओए वासुदेवनी पेटे तेनो त्रिखंडना अधिपतिपणाना राज्य उपर पट्टाभिषेक कर्यो. एक दिवस श्री वीरप्रभुने कोणिक राजाए पूछ्युं, स्वामी ! चक्रवर्ती केटला थया ? भगवान् बोल्या के आ अवसर्पिणी काळने विषे बार चक्रवर्ती थया छे. त्यारे कोणिके कह्युं, हुं तेरमो चक्रवर्ती थइश. एम कहीने नवीन चक्र रत्नादि चक्रवर्तीने योग्य बनाव्यां. पछी बैताढयनी गुफाना द्वार पासे गयो. तिहां द्वारने दंड

मारवाधी अधिष्ठायक देवे द्वार उघाडयुं. तेनी उष्ण-
ताधी कोणिक राजा तेज समये बळीने भस्मीभूत
थइ मरीने नरके गया. माटे अनर्थदंडधी विराम
पामवुं, नहीं तो कोणिकनी पेटे अवश्य नाश थाय.

९ मा सामायक व्रत उपर चंद्रावतंस राजानी कथा.

विशालापुरीने विषे चंद्रावतंस राजा राज्य करे
छे. ते जैनधर्मपालक परम नैष्ठिक साम्राज्यने करतो
हतो. एकदा पाखीने दिवसे ते राजाए पोताना
घरने विषे एवो अभिग्रह कर्यो के, ज्यां सुधी दीवो
बळे त्यां सुधी मारे कायोत्सर्ग पाळवो नहीं. दासीने
ते अभिग्रहनी खबर न होवाने लीधे, स्वामीभक्तिए
करी आवीने, दीवानुं तेल बळी गयुं त्यारे बीजी
वार पूर्यु. एम ज्यारे ज्यारे तेल थइ रहे त्यारे त्यारे
दासी आवीने तेल पूर्या जाय. ए रीते आखी

રાત્રિ દીવો બળ્યો ત્યાં સુધી રાજાએ કાયોત્સર્ગ પૂરો ન કર્યો. સૂર્યોદય થયો ત્યારે કાયોત્સર્ગ પૂરો થયો. આખી રાત ઉભો રહેવાથી શરીરે રુધિરે કરી ભરાઈ ગયો, તેથી જેમ પર્વતનું શિખર તૂટી પડે તેમ તે રાજા નીચે ભૂમિએ પડી મરણ પામ્યો, તે શુભ ધ્યાને કરીને શુભ ગતિને પામ્યો. વાસ્તે સામાયિક કરનારા મનુષ્યોનાં પાતક દહન થઈ જાય છે, એમ જાણવું.

૧૦ મા દેશાવકાશિક વ્રત ઉપર કાકજંઘ
અને કોકાશની કથા.



વિદેહા નગરીને વિષે કાકજંઘ નામા રાજા અને કોકાશનામા સૂત્રધાર વસે છે. તે કાકજંઘ રાજા લાકડાના સંચાણ ગોઠવેલા એવા ગરુડ પર બેસીને ફરે છે, તથા તે કોકાશ લાકડાના સંચાવાળા અશ્વ ઉપર બેસીને ફરે છે. તે સૂત્રધારને લોકો

कोकाश एवे नामे कहे छे. ते काकजंघ परम जैन हतो. पोतानी विद्याना बळे करी संमेतशिखर पर्वत तथा अष्टापद प्रमुख तीर्थने विषे श्री देवाधिदेव अरिहंत प्रभुने नमस्कार करे छे. एक दिवस ते काकजंघे प्रातःकालने विषे गुरुनी पासे जइ अमुक नगरथी मारे दूर जवुं नहीं, एवा देशावकाशिक व्रतने ग्रहण कर्युं. पछी एक दिवस ते एक पोतानाज गामने विषे संचाए करी चालता एवा काष्ठना घोडा उपर बेसीने गगनमार्गने विषे चालवा लाग्यो. धारेला गाम बहार नीकळी गयो. दैवयोगे ते काष्ठना अश्वनी कीलिका भांगी, तेवारे आकाशथकी पर्वतनी उपर पडयो. त्यां मरण पामवाथी व्रतनी विराघनाए करीने ते काकजंघ दुर्गतिने पाम्यो. माटे व्रत ग्रहण करवुं ते कोइ दिवस अजाणपणाथी पण छोडवुं नहीं.*

*उपर प्रमाणे बीना जैनकथा रत्नकोष भाग ५मामां छे पण उपदेशप्रासादमां एम लखे छे के, काकजंघ राजाने दिशिब्रतना परिमाण उपर चाली गयानी बात मालुम पडवाथी तेणे जो के

૧૧ મા પૌષધવ્રત ઉપર મેઘરાજાની કથા.



શાસ્વતી નગરીને વિષે મેઘરથ રાજા રાજ્ય કરે છે, એકદા તે રાજાની સભામાં નિમિત્તિયો આવ્યો. તે નિમિત્તિયાને મંત્રીએ પૂછ્યું જે, કાંઈક નિમિત્ત કહો. ત્યારે નિમિત્તિએ કહ્યું કે, આજથી સાતમે દિવસે આ રાજાના મસ્તક ઉપર વિજળી પડશે. તે વચનથી સર્વ જનો ભયભ્રાંત થઈ ગયા. પછી રાજાએ પૂછ્યું કે, હવે મારે કેમ કરવું ? ત્યારે કેટલાકે કહ્યું કે, વહાણમાં બેસીને સમુદ્રમાં જવું, કેટલાએકે કહ્યું કે, ગિરિગુફામાં જઈને રહેવું, ત્યારે તેનો એક સુબુદ્ધિ નામે પ્રધાન હતો, તેણે કહ્યું કે, એ સર્વ જવા ઘો

દુશ્મન રાજાના ગામમાં ગરુડ ઉતારવાનું હતું અને ઘણા કષ્ટમાં આવી પડવાનું હતું તોપણ તે કબૂલ કર્યું પણ જાણી જોઈને વ્રત ભાંગીને આગલ જવાની ના પાડી અને ત્યાંજ ઉતર્યો, કષ્ટમાં આવી પડ્યો, અન્ય રાજાની મદદથી છૂટ્યો, તે બંને જણે દીક્ષા લીધી અને અનુક્રમે તેજ ભવે મોક્ષે ગયો. ઉપર પ્રમાણે બંને વાતો વિરુદ્ધ ભાવ દર્શાવનારી છે, માટે સત્ય કેવલી જાણે.

अने देवधर्म आराधन करो, जेणे करी सर्व विघ्नोनो नाश थड जाय. पढी राजाए नवीन पाषाणनो यक्ष कराव्यो अने तेने राज्याभिषेक कराव्यो, अने पोते सर्व त्याग करी जिनालयमां बेसी पौषधव्रत धारण कर्युं. ज्यारे सातमो दिवस आव्यो त्यारे विजळी पाषाणना यक्ष उपर पडी, तेथी ते यक्ष तरत फाटी गयो. एटले राजाने मूकी यक्षनी उपर विद्युत् पडी अने राजा पौषधव्रतना प्रतापे करी बची गयो. ते राजाना जीववाथी सर्व जनोने परम प्रमोद थयो. ते राजा अनुक्रमे दशमे भवे श्रीशांतिनाथनामा तीर्थकर थया. एम पौषधव्रतना प्रतापे करी मरण-दुःख मटयुं तथा अनुक्रमे तीर्थकरपणुं प्राप्त थयुं, माटे सर्व भव्य जीवे पौषधव्रत धारण करवुं.

१२ मा अतिथिसंविभाग व्रत उपर
मूलदेवनी कथा.

कौशांबी नगरीने विषे रिपुमर्दननामा राजा,

तेनो पुत्र मूलदेव करीने हतो, ते अत्यंत दाननो
व्यसनी हतो. एक दिवस कोइना मुखथी नहुं काव्य
सांभळीने तेने एक लक्ष द्रव्य आपतो हवो. ते
सांभळी तेना पिताए दाननो निषध कर्यो तेथी ते
छानोमानो घरथकी नीकळी गयो. अनुक्रमे एक
अटवीमां आव्यो. त्रण दिवसे ते अटवी उतरी गयो.
त्यां कोइक नगरीने विषे भमतां भमतां ते मूलदेवने
बाफेला बाकळा कोइके आप्या. ते बाकळा पोते न
खाधा अने भाव सहित कोइएक साधुने वहोरा-
व्या. ते जोइ ते वननी देवीए तुष्टमान थइ मूल-
देवने कह्युं के, वरदान माग. ते वारे मूलदेवे एक ह-
जार हाथी युक्त राज्य माग्युं. देवीए पण तेज वरदान
आप्युं. त्यार पछी नगर प्रत्ये जातां कोइक गामने
विषे पर्णकुटीमां सूतो. त्यां पोताना मुखमां चंद्र
प्रवेश थयो एवुं स्वप्न दीतुं. प्रभाते उठीने मूलदेवे
तेनुं फळ कोइ. स्वप्नपाठकने पूछ्युं. तेवारे ते स्वप्न-
पाठके प्रथम तो मूलदेवने पोतानी पुत्रीनुं पाणिग्रहण

कराव्युं ने पछी कह्युं के, आ स्वप्नना फळमां तमने राज्यप्राप्ति थशे. ते पछी सातमे दिवसे महम्मति नगरीने विषे राजा अपुत्रीओ मरण पाम्यो. ते राजानुं राज्य पंचदिव्यथकी ते मूलदेवने प्राप्त थयुं. एवी रीते अतिथिसंविभागव्रतना प्रतापथी तेनी स्थिति उत्तम थइ, ते माटे अतिथिसंविभागव्रत करवुं.

क्रोध उपर साधुनो दृष्टांत.

एकदा गुरु साथे शिष्यो स्थांडिलभूमि तरफ जता हता. त्यांथी पाछा आवतां गुरुना पगतळे एक नानी देडकी चगदाइ मरण पामी. त्यारे शिष्योए कह्युं के महाराज ! आपना पगनीचे देडकी चगदाइ गइ. गुरुए जवाब आप्यो के, सांजे प्रतिक्रमणवखते तेनुं प्रायश्चित्त लइश. प्रतिक्रमणनो वखत थयो ए-टले सघळा साधुओए जे दोष लाग्या हता तेनुं प्रायश्चित्त लीधुं पण गुरुए देडकीनुं प्रायश्चित्त न लीधुं.

तेथी शिष्ये कह्युं के महाराज आपे देडकीनुं प्राय-
 श्चित केम न लीधुं ? गुरुए विचार्युं के मने एणे बधा
 वच्चे कही भोंठो पाडयो तेथी तेना उपर क्रोध च-
 डयो अने तेने मारवा दोडतां अंधारामां उपाश्रयना
 थांभला साथे अफळावाथी माथुं फुटी गयुं. त्यांथी
 मरीने तापस थयो, त्यां पण उपवनमां पुष्प फळा-
 दिकने माटे आवेला राजकुमारोने क्रोध करीने मा-
 रवा दोडतां कुवामां पडी मरण पामीने चंडकोशीयो
 दृष्टीविष सर्प थयो. आ उपरथी सार ए लेवानो छे
 के क्रोध करवाथी आ लोकमां अने परलोकमां केटलुं
 दुःख वेठवुं पडे छे ते उपरना द्रष्टांतथी जणाशे माटे
 क्रोधनो त्याग करवो.



मान उपर दशार्णभद्रनो दृष्टांत.



एक वखत दशार्णभद्रे पोतानी ऋद्धिना अहं-
 कारथी एवो विचार कयों के कोइए महावीर स्वा-

मीने न बांधा होय एवी ऋद्धिथी मारे बांदवा, एम धारी पोतानी जेटली ऋद्धिहती ते सघली ऋद्धिवडे करीने महावीर स्वामीने बांदवा समवसरण भणी चाल्यो. इंद्रे अवधिज्ञानवडे करी दशार्णभद्रना अभिप्रायने जाण्यो तेथी तेनो मान उतारवा माटे इंद्र पण अनेक प्रकारनी ऋद्धि विकुर्वी महावीर स्वामीने बांदवा आव्यो. दशार्णभद्रे इंद्रनी ऋद्धि जोड विचार्युं के मारी ऋद्धि आ इंद्र महाराजनी ऋद्धि पासे कंड गणत्रीमां नथी. एमणे मारो अभिमान तोडी नांख्यो तो हुं एवुं काम करुं के जे इंद्रथी बनी शके नहि. एम विचारी सर्व कुंटुंब परीवार राज्य आदिकनो त्याग करी चारित्र अंगीकार कर्युं. इंद्रने ते काम करवुं अशक्य होवाथी आवीने तेने नम्यो. आ उपरथी सार ए लेवानो छे के अमिमान कोइनुं रहेतुंज नथी, एम जाणी अभिमाननो सर्वथा त्याग करवो अने नम्रता राखवी.

माया उपर श्री मल्लीनाथजीनी कथा.

ज्यारे श्री मल्लीनाथे पूर्वभवमां दीक्षा ग्रहण करी त्यारे पोताना छ मित्रोने कहेवा लाग्या के मारी साथे सर्वेए समान तप करवा. पण कोइए वधारे ओछो करवो नहीं. ते सौए कबूल कर्युं, परंतु मल्लीनाथनो जीव कपट करी ज्यारे मासक्षपण व्रतनुं पारणुं आवे त्यारे बीजा मित्रोने कहे, मारा पेटमां दुःखे छे, माटे हुं सर्वथा पारणुं करीश नहीं, एम पारणे पारणे कपटथी बीजा छ साधुथकी अधिक तप करतां तेमणे तीर्थकरनामकर्म उपांजन कर्युं. परंतु कपटे तप करवाथी मल्लीनाथना भवमां तेमने स्त्रीपणुं प्राप्त थयुं. त्यां तीर्थकर थया तोपण स्त्रीपणुं तेमने हतुं. पाणी ग्रहणने अर्थे आवेला पोताना पूर्वभवना छए मित्र जे राजाओ थया हता, तेमने अशुचिए भरेली शालिभंजीका एटले मूर्तिमां भरेला

અન્નના દર્શનથી પ્રતિબોધ પમાડયા એમ મહ્લીનાથને કપટે કરી સ્ત્રીપણું પ્રાપ્ત થયું.

માયા ઉપર મહેશની કથા.

એક દિવસ મહાદેવજી પોતાની સ્ત્રી ગંગા અને પાર્વતીની પાસ કહેવા લાગ્યા કે હું સંસાર માર્ગથી ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયેલો છું, માટે હવેથી મારે તમારી બેડના સાથે કાંઈ કામ નથી, હું તો હવે તપજ કરીશ. એમ કહીને શંકર કૈલાસ પ્રત્યે ગયા; ત્યાં તે પર્વતની ગુફામાં પદ્માસન વાલીને ધ્યાનમાં બેઠા. પાર્વતીએ જાણ્યું જે શીવજી તપસ્યામાં બેઠા છે પણ તે સંસાર ઉદ્વિગ્ન હું છું એમ કંહી ગયા છે, માટે તેના તપનો હું ભંગ કરું છું. એમ ધારીને પોતે ભીલડીનો વેશ ધરીને ત્યાં જઈ શંકર પાસે રહીને નાના પ્રકારના હાવભાવ કટાક્ષ કરવા માંડયા, તે વારે ધ્યાન મૂકીને શીવજી તે ભીલડીની પ્રાર્થના કરવા લાગ્યા

કે હે ભદ્રે ! તું મહારી સ્ત્રી થા. ત્યારે ભીલડી બોલી
 કે, મારો સ્વામી તો ભીલ છે, તે પછવાડે ચાલ્યો
 આવે છે, માટે જો તેમ હું કરું તો તે ભીલ, મને
 અને તમને બેડને શિક્ષા આપે. ત્યારે શીવજી કહેવા
 લાગ્યા કે હે સુંદરી ! મેં ત્રિપુર જેવા લક્ષ દૈત્યોને
 મારી નાંખ્યા તો તારો સ્વામી વિચારો શી ગણત્રીમાં
 છે. ત્યારે ભીલડી કહે છે જો એમ હોય તો તમે મારી
 પાસે નૃત્ય કરો તો હું તમારી સ્ત્રી થાઉં. ત્યારે તે
 ભીલડીને વશ પડેલા મહાદેવે નૃત્ય કરવા માંડ્યું.
 પછી પાર્વતીને અસલ સ્વરૂપમાં જોઈને લજ્જીત થઈ
 મનમાં ખેદ પામ્યા, જે અરે ! આ શું થયું. હું કહેતો
 હતો જે હું સંસારથી વિરક્ત છું, છતાં મને કપટે
 કરી એણે છલ્યો તેથી હું પરવશ થઈ ગયો. એમ સ-
 મજી લજ્જા પામ્યા. એમ માયાથી શંકર પળ ઠગાયા.
 માટે માયાનો ત્યાગ કરવો.



लोभ उपर सुभूम चक्रवर्त्तिनो द्रष्टांत.

बारमो चक्रवर्त्ति सुभूम नामे हतो. तेणे छ खंड जीत्या अने घणी ऋद्धिनो स्वामी थयो, तोपण तेट-लेथी तेनो लोभ शांत थयो नहिं. तेणे विचार्यु के हुं धातकीखंडने जीतीने त्यांनी राज्यलक्ष्मीनो मालीक थाउं, एवो विचार करी देवताओए उपाडेला सुखासनमां लवण समुद्रने रस्ते धातकी खंड तरफ जवा नीकळयो. पण पालखीने उपाडवा लागेला सघळा देवताओना मनमां एम आव्युं के मारा एकना नहि उपाडवाथी पालखी शुं पडी जशे ? एवी रीते दरेकना मनमां एकी वखते सरखो विचार आववाथी तेओमांना सर्वए पालखी छोडी दीधी. तेथी ते समुद्रमां पडी मरण पामी, सातमी नारकीए गयो. आ उपरथी सार ए लेवानो छे के सुभूम चक्रवर्त्तीने लोभना वश थकी आ लोकमां मरणनुं दुःख तथा परलोकमा नारकीनुं दुःख सहन करवुं पड्युं. तेम जाणी सघलाए लोभनो त्याग करवो. इति.

अथ श्री चउसरण.

मुजने चार सरणां होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधोजी ॥
 केवली घर्म प्रकाशीयो, रतन अमूलक लाधोजी ॥१॥
 चिहुंगतितणां दुःख छेद्वा, समरथ सरणां एहोजी ॥
 पूर्वे मुनिवर जे हूआ, तेणे कीयां सरणां एहोजी ॥२॥
 संसार मांही जीवशुं, तासीम सरणां चारोजी ॥
 गणि समय सुंदर इम कहे, कल्याण मंगलकारोजी ॥३॥

लाख चोरासी जीव खमावीए. मनधरी परमविवेकोजी ॥
 मिह्यामिदुक्कडं दीजीए, मन धरी परम विवेकजी ॥१॥
 सात लाख भू दग तेउ वाउ दस, चौद वनना भेदोजी ॥
 षट्विगल सुरतिरि नारकी, च्यार च्यार चौद नरना
 भेदोजी ॥ लाख० ॥ २ ॥

मुज वैर नही छे केहशुं, सद्दुशुं मैत्री भावोजी ॥
 गणि समयसुंदर इम कहे, पामीए पुन्य प्रभावोजी ॥
 लाख० ॥ ३ ॥ इति ॥

पाप अढारे जीव परिहरो, अरिहंतनी साख्यो जी ॥

(५६)

आलोयां पाप छुटीए, भगवंत इणिपरे भाख्योजी
पाप, ए आंकणी ॥ १ ॥

आश्रव कषाय दोय बंधवा, वली कलह अभ्याख्यानोजी
रति अरति पैशुन निंदाने, मायामोस मिथ्यातजी ॥२॥
मनवच कायाए जे कियां, मिह्यामि दुक्कडं देहोजी ॥
गाणि समयसुंदर इम कहे, जिनधर्मनो मर्म एहोजी ॥३॥

धन्य धन्य ते दिनं मुज कदि होशे. हुं पामीश
संजम सूधोजी ॥

पूर्वऋषि पंथे चालशुं, गुरु वचन प्रतिबूझ्योजी ॥ १ ॥
अनियत भीक्षा गोचरी, रण वन काउस्सग लेशुंजी ॥
समता वस्तु ए मित्रशुं, संवेग सुधो धरशुंजी ॥ २ ॥
संसारनां संकट थकी, छुटीश जिनवचन अवधारोजी ॥
धन्य समयसुंदर ते घडी, पामीश भवनो हुं पारोजी ॥३॥



શાસ્ત્રકર્તૃઆશિષ.

શિવમસ્તુ સર્વજગતઃ, પરહિતનિરતા મવંતુ ભૂતગણાઃ
દોષાઃ પ્રયાંતુ નાશં, સર્વં ત્ર મુત્તીમવંતુ લોકાઃ ॥ ૧ ॥

વિશ્વત્રયમાં અખંડ શાંતિ પ્રસરે ! સમસ્ત પ્રાણીવર્ગ
પરોપકાર રસિક બને ! દોષ માત્ર નિર્મૂળ થાઓ ! અને સર્વત્ર
સૌ કોઈ લોકો સુખી થાઓ ! ૧

પરમાર્થભાવના.

પરહિતચિંતા મૈત્રી, પરદુઃસ્વભિનાશિની તથા કરુણા;
પરમુત્સુહૃદિ મુદિતા, પરદોષો-પેક્ષણ-મુપેક્ષા. ॥ ૧ ॥

અન્ય જીવોનું હિત-શ્રેય-કલ્યાણ થાય, એવી અંતરની
લાગણી રાખવી તે મૈત્રી; અન્ય જીવોનાં દુઃખનો અંત આવે,
એવી ઉંડી લાગણીથી યથાશક્તિ યત્ન કરવો તે કરુણા; અન્ય
જીવોની સુખ સમૃદ્ધિ અથવા શુભ ગૌરવ દેખી દિલમાં પ્રમુદિત
(રાજરાજ) થવું તે મુદિતા અને અન્ય જીવોના (અત્યંત
કઠોરતા, નિર્દયતા, ઈર્ષ્યા, નિંદા પ્રમુખ) અનિવાર્ય દોષો તરફ
ઉપેક્ષા કરી તેમના ઉપર રાગદ્વેષ નહિ લાવતાં, તેમને કર્મવશ-
વર્તી બાળી સમજાવે રહેવું તે ઉપેક્ષા લાવના છે. ૧

રાખવા લાયક અગત્યની સૂચના.

- ૧ પુસ્તકને થૂંક લગાડવું નહિ.
- ૨ પુસ્તકને અશુદ્ધ વાંચવું નહિ.
- ૩ પુસ્તકને પગ લગાડવો નહિ.
- ૪ પુસ્તકને પટકવું નહિ.
- ૫ પુસ્તકને પાસે રાખી વાછૂટ કરવી નહિ.
- ૬ પુસ્તકને પાસે રાખી ભોજન કરવું નહિ.
- ૭ પુસ્તકને પાસે રાખી પેશાબ કરવો નહિ.
- ૮ પુસ્તકને પાસે રાખી ઝાડો કરવો નહિ.
- ૯ પુસ્તકનો અક્ષર થૂંકથી ભૂંસવો નહિ.
- ૧૦ પુસ્તક ઉપર બેસવું કે સૂવું નહિ.
- ૧૧ પુસ્તકનો અગ્નિથી નાશ કરવો નહિ.
- ૧૨ પુસ્તકનો પાણીથી નાશ કરવો નહિ.
- ૧૩ પુસ્તકનો ફાડીને કે બીજા કોઈ પણ પ્રકારે નાશ કરવો નહિ.

